छायायुगीन निबन्धकारों का रचना शिल्प

डॉ० संयुक्ता कुमारी सिंह

गोपीनाथ सिंह महिला महाविद्यालय, गढ़वा।

छायावादियों की बृहत् चतुष्टयी ने अपनी कल्पना–सुधा से हिन्दी काव्य को ही अभिषिक्त नहीं किया, अपितु गद्य साहित्य की दीप्ति में भी चार चाँद जोड़े हैं। उनके शब्द में यदि उनकी संवेदन–सरिता प्रवाहित हुई है, तो उनके गद्य में उनकी जीवन दृष्टि का विशद् उन्मेष हुआ है और उनके विचारों एवं मूल्य बोध ने मूर्त रूप ग्रहण किया है। एक समान काव्य प्रवृत्ति से सम्बद्ध होते हुए भी प्रमुख छायावादी कवियों में से प्रत्येक का गद्य वैयक्तिक वैशिष्ट्य से परिपूर्ण है।

छायायुग के प्रमुख कवियों–प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी ने जहाँ एक ओर गद्य के भावपक्ष को समृद्ध किया वहाँ दूसरी ओर उसके शिल्प पक्ष को चरम उत्कर्ष पर पहुँचाने का श्रेय लाभ भी स्वतः प्राप्त किया। छायायुग से पूर्व गद्य का प्रयोग अधिकांशतः गंभीर विचारों की अभिव्यक्ति के लिए किया जाता था। छायावादी कवियों ने उसमें सर्वप्रथम सौन्दर्य कल्पना तथा रसतत्व का समावेश किया। इसके परिणामस्वरूप भाव पक्ष की दृष्टि से गद्य और पद्य बहुत निकट आ गए। वस्तुतः प्रसाद, पन्त, निराला मूलतः कवि थे, अतः जब इन कवियों ने गद्य क्षेत्र में प्रवेश किया तो इनकी स्वच्छन्दतावादी विचारधारा (रोमांटिसिज्म) भी गद्य में सहज ही समाविष्ट हो गई।

प्रसाद, निराला और महादेवी मूल रूप में कवि हैं। उनकी कारयित्री प्रतिभा वैसे सृजन तक सीमित है फिर भी उन्होंने छायावादी काव्य की सृजन प्रेरणा को प्रकृष्ट रूप प्रदान करने के लिए निबंधों का सृजन किया है। छायावादी काव्य के सृजन काल में सर्वप्रथम छायावादी कविता के पुरस्कर्ता जयशंकर प्रसाद हमारे मध्य आते हैं। उनका आलोचना साहित्य निबंधों के माध्यम से प्रकट होता है। काव्य और कला तथा अन्य निबंध में उन्होंने बड़े ही पांडित्य पूर्ण निबंध लिखे हैं। उसमें वे कला को श्रेष्ठ वस्तु मानते हैं और पाश्चात्यों से उसकी तुलना करते हैं। उन्होंने रस को काव्य की आत्मा स्वीकार किया है तथा काव्य में शुद्ध आत्मानुभूति की ही प्रधानता मानते हैं जो सौन्दर्यमयी और संकल्पात्मक होने के कारण अपनी श्रेय स्थिति में रमणीय आकार ग्रहण कर लेती है। प्रसाद के निबंधों में भाषा में सजावट एवं गठीलापन की प्रधानता दीख पड़ती है। इनकी भाषा में तत्सम शब्दों की प्रचुरता के साथ प्रयोग है।

वय की दृष्टि से प्रसाद के बाद निराला आते हैं जो हमारे आलोच्य की सीमा में आते हैं। निराला का निबंध साहित्य कई संग्रहों में प्रकीर्ण है। इनके संग्रहों में मुख्य हैं प्रबन्ध–पद्म, प्रबंध प्रतिमा, चाबुक, पंत और पल्लव तथा चयन। इसके अतिरिक्त उन्होंने काव्य की भूमिकाओं में भी कुछ को निबंधात्मक स्वरूप प्रदान किया है जैसे परिमल की भूमिका। पत्र–पत्रिकाओं में आलोचना एवं माधुरी में उनके कुछ निबंध प्रकाशित हैं।

तीसरे स्थान पर सुमित्रानंदन पंत आते हैं। पंत के निबंध गद्य–पथ, शिल्प और दर्शन, कला और संस्कृति आदि संग्रहों में देखने को मिलते हैं। पंत के स्वभाव और चरित्र की झलक उनकै पद्म में तो मिलती हीं

है गद्य में भी मिलती है। सौन्दर्य, संकोच, शील, शिष्टता और मृदुता आदि। इसीलिए जो गद्य लिखा वह आत्मीयतापूर्ण और स्वाभाविकता से पृक्त है। वे अपने निबंधों में कल्पना, दार्शनिकता और अंतर्राष्ट्रीयता आदि का चमत्कार परोक्ष और व्यापक सहारा न लेकर अकृत्रिम रूप से अपनी स्वाभाविक दृष्टियों, रुचियों और विचारों को व्यक्त करते चलते हैं। इस प्रकार पंत जी के निबंधों में काव्यमयता, मधुरता, सरसता, प्रवाहशीलता का आनंद लिया जा सकता है।

महादेवी ने अपनी करुण कोमल कविता से ही साहित्य में प्रवेश किया था। श्अतीत के चलचित्रश उनकी प्रथम गद्य पुस्तक है। रचना चाहे गद्य की हो या पद्य की, उसमें साहित्यकार अपने अनुभवों, विचारों तथा मनोभावों को प्रकट करना चाहता है। कवि और कहानीकार एक ही लोक का निवासी होता है, दोनों का एक ही उद्देश्य है–जीवन की मार्मिकता का संवेदनात्मक उद्घाटन। महादेवी ने भावात्मक तथा विचारात्मक गद्य के साथ–साथ विवेचनात्मक गद्य भी लिखा है। साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध उनके आलोचनात्मक का संग्रह है। उन्होंने छायावाद संबंधी सभी आलोचनाओं का उत्तर दिया है। इसी से उनमें बौद्धिक तीक्ष्णता के साथ भावात्मक संश्लेषण का स्वर बराबर गूँजता रहता है, जो साहित्य की सार्थकता और उपयोगिता का सबसे प्रौढ़ और सनातन प्रतीक है।

कुल मिलाकर छायायुगीन निबंधकारों का रचना शिल्प इतना प्रौढ़ है जिसे अन्यों से तुलना करना संभव नहीं। चूँकि उनके गद्य में प्रवाह है और निबंधों में चुश्ती तथा भाषा का निखरा हुआ स्वरूप। सभी छायावादी गद्य और पद्य दोनों विधाओं में अतुलनीय प्रमाणित होती हैं।

•••••